त्यागपत्र जैनेंद्र

उपन्यास का नायक प्रमोद कहता है कि पिताजी प्रतिष्ठा वाले थे और माता अत्यंत कुशल गृहिणी। वह जितनी कुशल गृहणी थी, उतनी कोमल नहीं थी। बुआ पिताजी से काफी छोटी थी। मुझसे कोई चार पांच वर्ष बड़ी होगी। मेरी माता के संरक्षण में ही मेरे भांति बुआ भी रहती थी। वह संरक्षण दिलाना था और आज भी मेरे मन में उस अनुशासन की कडाई पर विचार चला जाता है।

पिताजी दो भाई थे, और तीन बहने। पहले भाई इंजीनियर थे और उनकी इच्छा के अनुकूल उन्हें वर्मा भेज दिया गया था। और तब से आना-जाना एक राह रस्म की बात रह गई थी। दो बड़ी बहनें विवाहित होने के बाद प्रसव संकट में चल बसी थी। अकेली यह छोटी बुआ रह गई थी। पिताजी उनको बड़ा स्नेह करते थे। उनकी सभी इच्छाएं पूरी करते थे। पिताजी का स्नेह बिगाड़ ना दे इस बात का मेरी माता को खास ख्याल रहता था। वह अपने अनुशासन में सावधान थी। मेरी बुआ को प्रेम करती थी यह तो किसी हालत में नहीं कहा जा सकता।

बुआ का तब का रूप सोचता हूं तो दंग रह जाता हूँ। ऐसा रूप कब किसको विधाता देता है। जब देता है तब कदाचित उसकी कीमत भी वसूल कर लेने की मनाही नहीं है। पिताजी तो बुआ की मोहिनी मूरत पर ही गिर जाते थे। वह शहर के बड़े स्कूल में बग्गी पर पढ़ने जाती थी और घर आकर जो नई शरारतें वहां होती अकेले में सब मुझको ऐसा सुनाती थी। उस समय मुझे परियों कहानी का ध्यान हो आता और मैं मुक्त भाव से अपनी बुआ की ओर आकृष्ट हो रहता। मेरी माँ का बुआ सदा डर मानती थी। बुआ का पढ़ने में विशेष मन नहीं था पर वह किताब कापियां अपनी बहुत अच्छी तरह रहती थी। और स्कूल जाने का उन्हें बड़ा सौक था। स्वभाव बड़ा हंसमुख था और निर्धन बस मां के सामने जरा सच्चाई रहती थी। बचपन की बहुत सी बातें याद आती हैं। वह कैसे मुझे कपड़ा पहनाती थी। कैसे चपत मार-मार कर खिलाती कैसे प्यार करती और कैसे अपने भेद की सब बातें मुझसे कहती थी। मैं अपनी बुआ का साथ के लिए हर वक्त भूखा रहता। जब मुझे मिलती बड़े मीठे मीठे उपदेश दिया करती थी। कभी वह मुझे बेटा कहती कभी भैया कहती क्या कभी कुछ भी और न करती सिर्फ गधा कहती।

कुछ दिनों के बाद बुआ का ब्याह हो गया। ब्याह के दिन बुआ मुझे अपने सीने से चिपकाए हुए समझा रही थी, कि भैया प्रमोद बड़ों की आज्ञा सदा माननी चाहिए। सबका आदर करना चाहिए। सदा सच बोलना चाहिए। अच्छे लड़के ऐसे ही बनते हैं। प्रमोद तो एक दिन बड़ा आदमी होगा ना। उसके बाद बुआ बोलती है। प्रमोद तेरी बुआ तो मर गई। तू उसे अब कभी याद मत करियो। कैसा राजा भैया है हमारा। उस समय मेरी आंखें भीग गई थी, लेकिन मैंने यह बुआ को पता नहीं क्यों चले जाने दिया। और मुंह टूट गया वहीं पड़ा रहा। बुआ के जाते समय मैं खुलकर फूट-फूटकर रोया था।

चार दिन बाद जब वह वापस आई तो वैसे ब्याह के वक्त मैंने अपने फूफा को देखा था। बड़ी बड़ी मूछें थी और उम्र ज्यादा मालूम होती थी। मुझे यह पीछे मालूम हुआ कि उनका यह दूसरा विवाह था। हमारी बुआ फूल सी थी। मृणाल जब ससुराल से वापस आती है तो प्रमोद उसके व्यवहार में अंतर पाता है। वह कहता है कि लगता है तुम मुझे अब पराया मानती हो। यह सुनकर मृणाल प्रमोद को अपनी गोद में बिठा कर बोलती है ....."प्रमोद सच्ची सच्ची कहो तो मैं ही पराई हो गई हूं। तुम सब लोगों के लिए मैं पराई हूं। तेरी मां ने मुझे धक्का देकर पराया बना दिया है। पर मुझे जहां भेज दिया है प्रमोद मेरा मन वहां का नहीं है। तू एक काम करेगा ।" प्रमोद बड़ी उत्सुकता से ऊपर उनके मुंह की ओर देखता रहा कहना चाहता था कि तुम्हारा काम नहीं करूंगा तो प्रमोद बनकर मैंने यह जन्म क्यों पाया है।

ब्याह के कोई आठ 10 महीने बाद ही वह एक नौकर को साथ लेकर घर चली आती है। पिता इस बात से प्रसन्न होते हैं मां ने कोई नाराजगी नहीं प्रकट की बल्कि उन्होंने तो फूफा को काफी सर्द गर्म तक कह डाला। बुआ आई तो मानो मेरे पुराने दिन ही लौट आएं। पर देखता हूं कि बुआ में बहुत परिवर्तन आ गया है। उनकी तबीयत अभी स्थिर नहीं रहती। अंधेरे में जाकर अकेले चुपचाप पड़ जाती है। उनकी शारीरिक अवस्था भी ठीक नहीं है। सारी देह पीली पड़ गई थी और उनको गर्भ था। जीभ मिचलाया रहता था और खाना पीना कुछ अच्छा नहीं लगता था। हर बात से अभिरुचि मालूम होती थी। मैंने अकेले में उनके पास बैठकर पूछा, अब तो यहीं रहेगी ना बुआ। जल्दी तो नहीं जाओगी। बुआ ने कहा नहीं जाऊंगी पर मुझसे आने जाने की बात क्यों करता है। अपने पढ़ने लिखने की बात किया कर। कहते कहते उनकी जाने आंखें कैसी हो जाती थी और बानी कहां पर रुक जाती थी।

वास्तव में विवाह की ग्रंथि दो के बीच की ग्रंथि नहीं है। वह समाज के बीच की भी है। चाहने से ही वह क्या टूटती है। विवाह

भावुकता का प्रश्न नहीं व्यवस्था का प्रश्न है। वह प्रश्न क्या यों टाले टल सकता है। वह गांठ है जो बंधी की खुल नहीं सकती। टूटे तो टूट भले ही जाए लेकिन टूटना कब किसका श्रेयस्कर है।

प्रमोद के पिता और उनके फूफा के बीच पत्र व्यवहार के माध्यम से वे इस निश्चय पर आए थे कि अगर आइंदा इस तरह बुआ बिना फूफा की मर्जी से चली आएंगी तो वह अपने घर में आश्रय ना देंगे। प्रमोद के पिता मृणाल को समझाते हुए कहते हैं कि ....."पति के घर के अलावा स्त्री को और क्या आसरा है। यह झूठ नहीं है मृणाल की पत्नी का धर्म पति के घर है उसका धर्म कर्म और उसका मोक्ष भी वही है समझती तो हो बेटा।"

प्रमोद की विशेषताएं :- प्रमोद आत्मालाप करते हुए कहता है कि ....."मैं अपनी जिस व्यर्थ के प्रतिष्ठा के ढूंह ऊपर बैठा हूं, वह कृत्रिम है, क्षणिक है, लेकिन वही सब कुछ मुझे ऊंचा उठाए हुए हैं। नामी वकील रहा। अब जज हूं। लोगों को जेल फांसी देता हूं। समाज में माननीय हूं। इस सब के समाधान में चलो यही कहो कि या कर्मफल है। लेकिन सच पूछो तो मेरा जी जानता है कि वह कैसे कर्मों का फल है। कामयाब वकालत और इस जजी के इतने मोटे शरीर में क्या राय जितना भी आत्मा है। मुझे इसमें बहुत संदेह है। मुझे मालूम होता है कि मैं अपने को खो चुका हूं। तभी सफल वकील और बड़ा जज बन सका हूं। मेरा मन कह रहा है कतरा से भर आता है। समाज की जिस मान्यता पर मैं ऊंचा उठा हुआ खड़ा हूं। वह समय किस के बलिदान पर खड़ी है इस बात को जितना ही समझ कर देखता हूं उतना ही मन तिस्कार और ग्लानि से घिर जाता है। पर क्या करूं सोचता हूं उस समाज की न्यू को गुरु देने से क्या होता है गा न्यू दिल्ली ही होगी और ऐसे हाथ आने वाला कुछ नहीं है। यह सोच लेता हूं और रह जाता हूं।" पृष्ठ 40 -41। समाज के ऊपर चढ़े बैठकर मैं उसे दबा सकता हूं बदल नहीं सकता। अज्ञात रहकर सच्चा बंधु झूठा बनकर नामवर होने में क्या धरा है। व्यर्थ है ....."आत्मा को खोकर साम्राज्य पाया तो क्या पाया।" वह रत्न को गवां कर धूल का ढेर पाने से भी कमतर है। तब मेरी जजी मुझे साफ दिखती है और जान पड़ता है वहीं प्रवचना है। पृष्ठ 41

प्रमोद अपने बुआ से प्राप्त स्नेह के बारे में बताता है कि ....."जो प्रेम उनसे मुझे प्राप्त हुआ वह क्या किसी भी भांति भूला जा सकता है और क्या वह स्वयं इतना पवित्र नहीं है कि स्वर्ग के द्वार उसके समक्ष खुल जाए।" पृष्ठ 43

वह अपने जीवन का हिसाब किताब लगाता है और पाता है कि उसने जीवन में कुछ हासिल नहीं कर पाया। उसे बुआ की याद आती है।क्या बुआ प्रसन्न है। प्रसन्न है तो इधर मैं प्रसन्न क्यों नहीं हूं। ऐसा मन में उठता था और बैठ जाता था। कुछ समय बाद पता लगा कि उन्होंने कि मृत कन्या को जन्म दिया है। उसे जन्म देने के बाद उनकी ही हालत मृत प्राय हो गई थी। पर परमात्मा की दया से बच गई। पृष्ठ 43 बहुत दिनों के बाद पता चलता है कि फूफा ने बुआ को त्याग दिया है। बुआ दूस्चरित्र है और फूफा को मालूम है कि वह सदा से ऐसी हैं। इसलिए छोड़ दिया है। इसका मतलब एकाएक समझ में नहीं आया। छोड़ कहां दिया है। क्या वह खुद चली गई है या किसी अलग स्थान पर उनको रख दिया गया है। या उसी घर में ही है। और संबंध विच्छेद हो गया है। पता चला कि उसी शहर में अलग छोटे से घर में रख दिया है। एक कोठरी में उस में चाहे जैसे रहे चाहे जैसे खाए पिए। यह भी ज्ञात हुआ कि फूफा ने तो कहा था कि मायके चली जाओ पर बुआ इसके लिए बिल्कुल राजी नहीं हुई। धमकाया गया, मारा पीटा गया पर उन्हें मरना मंजूर हुआ हमारे यहां आना कबूल नहीं हुआ। तब खुद फूफा जाकर उन्हें अलग घर में छोड़ आए हैं। ट्विस्ट 45

काफी दिनों के बाद यह पता चला कि बुआ खुश नहीं रहती। वहां से किसी अन्य जगह चली गई है। अब वह किसी कोयले वाले के साथ रहती है। वह जहां रहती है वह हमसे दूर नहीं था। वह उसी के साथ एक कोने में पड़े रहती थी। यह बात एकदम बहुत ही अद्भुत और असंभव सी लगी। थोड़े दिनों के बाद पिताजी का देहांत हो गया। यूनिवर्सिटी जाते समय उस नगर के स्टेशन का बोर्ड देखा जिस नगर में उसकी बुआ रहती थी। देखकर एकाएक उसके मन में संकल्प उठने लगा कि लौटते वक्त वह वहां जरूर उतरेगा और वह बुआ को ढूंढ निकालेगा। और पूछेगा कि बुआ क्या तुम्हारा क्या हाल है। चलो यहां से चलो। इसी बीच उसकी मां उसकी शादी की बात कही छेड़ रखी थी। प्रमोद जब उस स्टेशन पर लौटते समय पहुंचा तो उससे रहा नहीं गया और उधर उतर कर उसने अपनी बुआ को खोज निकाला। शहर के उस मोहल्ले में जाते हुए उसका मन एकदम दबा जाता था। वह सोच रहा था कि कहां बुआ और कहां यह जिंदगी। कहां यह जगह जहां नीचे दर्जे के लोग रहते थे। भीतर गली में गहरे जाकर वहाँ एक कोठरी थी। बनिया बाहर एक दुकान लेकर वहां दिन में कोयले का व्यवसाय करता था। मैं कोठरी के द्वार पर पहले तो ठीकका, फिर हिम्मत बांध कर दरवाजा खोलता हुआ अंदर चला गया। बाबू ही थी, क्या वही, लेकिन वही थी। एक धोती में

बैठी अंगीठी पर कोयले की आंच में रोटी सेक रही थी। किसी को आते देख उन्होंने आँचल थोड़ा माथे के आगे खींच लिया था। लेकिन जब मुझे देखा तो देखती रह गई। क्या पहचाना नहीं या पहचान लिया है। मैं इस निगाह के सामने स्तब्ध होकर रह गया। मैं उस समय अपने को बहुत-बहुत धिक्कारने लगा कि यहां क्यों आया क्यों आया। कुछ ऐसा भाव उस दृष्टि में था। कुछ देर बाद चुपचाप उन्होंने मुझसे आंखें हटाकर अपने सामने की अंगूठी पर ही जमा ली और रोटी बनाने में लग गई थी। बुआ ही लेकिन उनका यह क्या रूप था दुबली थी मुख पिला था। गर्भवती थी, एक धोती में बैठी थी। मुख पर क्या काया छाई थी। कोठरी 9 बाई 10 वर्ग मीटर से बड़ी ना होगी। बाहर थोड़ी खुली जगह थी। जहां कमरे में एक ओर कपड़े थे। उसके पास ही 21 उनके ऊपर टांग काम के लिए गए थे बुआ की तरफ 2124 या और कुछ मिट्टी के सकोरे और टिन के डिब्बे थे। वहां पास कुछ पीतल एलमुनियम के बर्तन रखे थे और टीन की बाल्टी और पानी का घड़ा भरा था। एक कोने में कोई लिखी हुई थी। सब देखता रह गया। कुछ भी नहीं बोली एक तक सामने अंगूठी में देखते ही रोटी बनाने लगी। मैंने कहा मैं प्रमोद हूँ बूआ। 46 47

प्रमोद बुआ को इस हाल में छोड़ना नहीं चाहता था। वह उसे अपने साथ ले जाने की जिद करता है और वह कहता है मैं तुम्हें यहां इस हाल में नहीं रहने दूंगा।....."मृणाल कुछ क्षण रुककर प्रमोद से कहती है.....

" जरूर ले चलेगा, तो सुन मैं नहीं जाऊंगी मैं नहीं जा सकती। तुम मुझको नहीं जानते हो। मैं पति के घर को छोड़कर आ रही हूं। पति है, पर दूसरे पुरुष के आश्रय रह रही हूं। उसके साथ रह रही हूं। तुम ना जानो। मैं यह जानती हूं। तुम अपनी आंखें ढक लो, लेकिन मुझसे अपना यह पातक निकल जाने को नहीं कह सकते। फिर जिनको साथ लेकर पति को छोड़ आई है उनको मैं छोड़ दूं। उन्होंने मेरे लिए क्या नहीं किया। उनकी करनी पर मैं बच्ची हूं। मैं मर सकती थी, लेकिन मैं नहीं मरी। मरने को अधर्म जानकर ही मैं मरने से बच गई। जिसके सहारे मैं उस मृत्यु के अधर्म से बची। उन्हीं को छोड़ देने को मुझसे कहते हो। मैं नहीं छोड़ सकती। पापीनी हीं हो सकती हूं पर उसके ऊपर क्या बेहया भी बनूँ। क्यों मुझे तंग करते हो।"।

प्रमोद खाना खा लेने के कुछ देर बाद बाहर आता है और उस कोयले वाले को खाने के लिए अंदर भेजता है। प्रमोद इस जगह के बारे में सोचता है और देखता है कि जहां

बुआ रहती है वह एक विचित्र मुहल्ला है। वहां दिन शायद ही कभी होता दिन में रात होती थी और रात में क्या होता होगा पता नहीं शेती शेती कोठरिया थी विक्कू ट्री की दुकानें थी और रात में वही ख्वाबगाह किसी पर सस्ती बिस्साइड की चीजें हैं तो किसी पर बासी साग भाजी और उसके फल रखे हैं। कहीं नहीं है कहीं हाथ की मशीन लिए दर्जी बैठा अमेरिकन तर्ज के कपड़े सी रहा है। यहां आसमान भी एक गली बन जाता है। और काल की गिनती रातों के हिसाब से होती है। मैं b.a. का विद्यार्थी उस दुकान का गेट हल्का हुआ बुआ की और उनके चारों और कि उस परिस्थिति के विचित्रता पर बिना सोचे जाने क्या क्या सोचता रहा। इतने में व्यक्ति ने आकर कहा कि आपको बुला रही है। मैं चलने लगा तब एकाएक लगभग मुझे बाहर से पकड़कर रोकते हुए कहा 1 मिनट 1 मिनट का ही छोड़ते हुए आगे बढ़ गया तो उसके हाथ में कागज में लिप्त था उसे सामने कर लीजिए 51 52।

प्रमोद मृणाल से पूछता है तुम यहीं रहोगी। इसी जगह कब तक रहोगी। मृणाल कहती अभी तो इसी जगह इस कोठी में ना रहूंगी तो कोई और रहेगा। यह कुर्सियां तो आवाज ही रहेंगे इसमें रहने लायक आदमी बहुत है। आगे का हाल मैं नहीं जानती हूं। हां समझती हूं कि मैं ज्यादा दिन यहां नहीं रह पाऊंगी। प्रमोद पूछता है तब कहां जाओगी मिनाल कहती है .....कौन जानता है फिर कहती है तुम समझते हो यह आदमी जिसके साथ में रह रही हूं मुझे ज्यादा दिन रख सकेगा। नहीं मैं जानती हूं एक दिन यह मुझे छोड़ कर चला जाएगा। तभी इस कोठरी से मेरे उठने का भी दिन होगा। पृष्ठ 55

प्रमोद के मन में कई प्रकार के सवाल उठ रहे थे। मृणाल उसके सवालों को उत्तर देते हुए कहती है....." जिसको तन दिया उससे पैसा कैसे लिया जा सकता है। यह मेरी समझ में नहीं आता। तन देने की जरूरत मैं समझ सकती हूं। तन दे सकूंगी शायद वह अनिवार्य है पर लेना कैसा। दान स्त्री का धर्म है नहीं तो उसका और क्या धर्म है। उसमें मन मांगा जाएगा तन भी मांगा जाएगा सती का आदर्श और क्या है। पर उसकी बिक्री ना, ना होगा अगर यह सोचती हूं कि वह सब मुझे कह रही थी। ऐसा बिल्कुल प्रतीत नहीं हुआ। मानो अपनी ही कल्पनाओं को उत्तर द्वारा निरुत्तर करना चाहती हो। मैंने कहा वह नाराज ना होना लेकिन मैं पूछता हूं ऐसी तुम क्यों हो गई। पति को क्यों छोड़ दी।

बुआ ने स्थिर भाव से मुझे देखते हुए कहा तुमसे नाराज होंगी यह क्या तुम संभव

समझते हो। पति को मैंने नहीं छोड़ा उन्होंने मुझे छोड़ा है मैं स्त्री धर्म ही मानती हूं उसका स्वतंत्र धर्म मैं नहीं मानती क्योंकि पतिव्रता को यह चाहिए कि पति उसे नहीं चाहता तब भी वह अपना भार उस पर डाले रहे मुझे देखना भी नहीं चाहते यह जानकर मैंने उसकी आंखों के आगे से हट जाना स्वीकार कर लिया उन्होंने कहा मैं तेरा पति नहीं हूं तब मैं किस अधिकार से अपने को उन पर डाले रहती पतिव्रता का या धर्म नहीं है।"

प्रमोद जानना चाहता है कि बुआ के साथ आखिर ऐसा क्या हुआ कि वह इस हाल में पहुंचती है तो मिलना हाल बताती है कि....." ब्याह के बाद मैंने बहुत सोचा सोचकर अंत में यही पाया कि मैं छल नहीं कर सकती छल पाप है ब्याह का को पतिव्रता होना चाहिए उसके लिए पहले उसे पति के प्रति सच्ची होनी चाहिए सच्ची बनकर ही समर्पित हुआ जा सकता है प्रमोद शीला के भाई को तुम जानते हो उनका एक पत्र आया था पत्र में कुछ विशेष नहीं था यही था कि अब मैं सिविल सर्जन हूं शादी नहीं हुई है ना करूंगा तुम्हारा विवाह हो गया है तुम सुखी रहो मेरे लायक कोई सेवा हो तो लिख सकती हो उसी पत्र को लेकर ही मेरे मन में सोच विचार का चक्कर चला था मैंने जवाब में लिख दिया कि आपके पत्र के लिए कृतज्ञ हूं पर आइंदा आप कोई पत्र ना भेजें मैं सुखी होने की कोशिश कर रही हूं जवाब देने से पहले दोनों पत्रों का जिक्र तुम्हारे फूफा से कर देना जरूरी था सुनकर उन्होंने कहा कि तुमसे कहने की कोई जरूरत नहीं है या था तो मुझसे शादी क्यों की कुछ देर बाद उन्होंने कहा कि मैं हरामजादी हूं मैंने कोई प्रतिवाद नहीं किया उस दिन से तुम्हारे फूफा मुझ से किनारा करते चले गए मुझे तो अब नाराज होने का अधिकार ना था उन्होंने मेरी परवाह करनी छोड़ दी मैं इस योग्य थी भी उनकी परवाह का अधिकार मुझे क्या था काम करती थी और जो मिलता उसे पेट भर कर पड़ी रहती थी एक दिन उन्होंने एकदम आकर कहा चल निकल यहां से मैंने आज्ञा मानने की जिद नहीं कि मुझे वहीं शहर से दूर एक कोठरी में लाकर खुद ही छोड़ गए। साथ ही जरूरी चीज वस्तु उन्होंने लाकर दे दी कहानी यही है।"..... इस पर प्रमोद कहता है तुम घर क्यों नहीं आ गई इस आदमी के साथ बसने के लिए यहां क्यों चली आई मृणाल कहती है प्रमोद मैं तुझे कैसे बताऊं मैं घर नहीं आ सकती थी एक बार घर आकर मैं समझ गई थी। कि वैसे मैंके जाना ठीक नहीं है इस्त्री जब तक ससुराल की है तभी तक मायके की है। ससुराल से टूटी, तब मायके से तो आप ही में टूट गई थी।..... प्रमोद फिर पूछता है कि यह क्या कह

रही हो तुम घर नहीं जा सकती थी यहां आकर एक अन्य पुरुष के साथ बस सकती थी पर घर नहीं जा सकती थी। मृणाल कहती है कि मैं नहीं जानती लेकिन इतना जानती हूं कि मेरा अस्तित्व मेरे लिए नहीं है इस समय तो बेशक में उस पुरुष की सेवा के लिए हूं जिसने मुझे आश्रय दिया है। पृष्ठ 57-58

मृणाल आगे कहती है लेकिन मैं जानती हूं कि इस आदमी को आप मुझसे भी रखती हो रही है और अपने परिवार की याद आ रही है जब सब को छोड़कर मुझे साथ ले चलने को उतावला था तब भी मैं जानती थी कि थोड़ी दिन बाद इसे लौटकर अपने परिवार के बीच आ जाना होगा जानती थी कि इसी अवश्य अनुरक्ति में से 1 दिन प्रबल विरक्ति का भाव उठेगा जानती थी इसलिए मैं उसे साथ ले आए वह बेरुखी का भाव अब शुरू हो गया है अब उसे चले ही जाना चाहिए परिवार उसका वहां अकेला है मुझे वार नहीं झेल सकता मेरी कोशिश है कि वह मुझसे उक्त आ जाए अपनी आवाज था मैं जानती हूं पेट में बालक है लेकिन ऐसी अवस्था में भी स्वार्थ की बात सूचना ठीक नहीं मैं उसे उसके परिवार में लौटा कर ही मानूंगी अब समय आ गया है कि उसे इस बात की आंख आ जाए अब उसका मुंह टूट गया है वह जान गया है कि मैं उसकी सर्वस नहीं हूं मैं बस एक बच्चा बदकार बाजारू औरत हूं। पृष्ठ 60

प्रमोद वहां से वापस आ जाता है इधर उसके विवाह की बात चल रही थी परंतु विवाह हो नहीं पाता काफी दिनों के बाद प्रमोद के मन में बुआ को एक बार फिर देखने का मन करता है वह फिर उस जगह पर जाता है परंतु अब की बार ना वहां कोयले वाला था और ना ही उसकी बुआ थी बहुत तलाश करने के बाद पूछताछ करने के बाद अस्पताल से या पता चला कि उसे एक पुत्री हुई है लेकिन अभी वह कहां है इसका कोई पता नहीं है प्रमोद का दूसरी जगह विवाह ठीक हुआ है और वहां लड़की देखने के लिए उसे जाना है जब वह वहां लड़की देखने जाता है तो लड़की उसे पसंद आ जाती है उस लड़की का नाम राजनंदनी है अचानक वहीं पर उसकी भेंट अपनी बुआ से हो जाती है

बुआ उसी घर में बच्चे को ट्यूशन पढ़ाया करती थी। लगभग विवाह पक्का हो चुका था लेकिन जब मैंने उनके घर की मास्टरनी से अपना संबंध बताया कि वह मेरी बुआ है तो राजनंदनी की मां को इस पर घोर आपत्ति हुई राजनंदिनी के पिता तैयार थे परंतु राजनंदिनी की माता और बिरादरी को उसमें आपत्ति थी वह विवाह टूट गया लेकिन उसके पिता से संबंध मेरे अच्छे रहे नंदिनी के दूसरे विवाह पर उन्होंने बहुत असंतोष भी प्रकट किया था कदाचित उसका कुछ दुष्परिणाम भी सुनने में आया नौकरी छूट जाने के बाद हुआ अब वहां नहीं थी पता नहीं वह जगह छोड़कर अब कहां गई है इसका कोई पता नहीं है।

अंतिम बार जब प्रमोद बुआ से मिला तब वह वकील था बुआ की हालत दर्दनाक थी वह बीमार थी और एक कोठरी में पड़ी थी और शायद और रहने का कोई व्यवस्था नहीं थी आसपास के कुछ लोगों की सहानुभूति उन्हें प्राप्त थी पर यह लोग उस वर्ग के थे जिनकी सहानुभूति की कीमत पैसे के तल पर नहीं के बराबर हो जाती है इस बात का बड़ा आश्चर्य यह था कि उन्होंने मुझे स्वयं पत्र लिखा था मेरी मां का देहांत हो चुका था इसकी खबर उन्हें देर से लगी पर लगते ही उन्होंने मुझे पत्र लिखा था उस पत्र को मैं कितनी बार पढ़ा पड़ता हूं और पढ़ कर रह जाता हूं जिस जगह जिस अवस्था में मैंने बुआ को पाया उसका वर्णन करते कष्ट होता है वर्णन नहीं करूंगा बुआ के इस पत्र से उसका अनुमान किंचित नहीं किया जा सकता जहां नगर की सड़ांध रहती है अधेड़ अवस्था की वेश्याएं विकार मजदूर पेशेवर भीख मंगे कानून की आंख और चंगुल से बचकर छिपे अरे काम करने वाले उचक्के लोगों के रहने की वजह थी बुआ वहां कैसे आ पड़ी पता नहीं वह बीमार थी खटिया से लगी पड़ी थी 45 ऊपर वर्ण के स्त्री-पुरुष आसपास थे उनके चेहरे पर बुआ के अवस्था के लिए आगरा और चिंता लिखी थी यह परेशान मालूम होते थे पर बात वे बड़ी लापरवाही के साथ करते थे और उन बातों के खुले पांसे जी में मानो मेरे मितली चढ़ती थी बुआ के प्रति उनका आधार पर उनके लिए सभी तू और इसका व्यवहार करते थे हया शर्माना थी और उस बुआ की खाट के पास भी उनमें आपस में भद्दे इशारे हुए बिना ना रहते थे। मैंने बहुत कोशिश की बुआ को वहां से लाने की परंतु मैं सफल नहीं हो सका मैं छोड़कर वहां से चला आया बुआ ने मुझसे कुछ पैसे मांगे थे कि तेरे पास कुछ पैसे हैं तो तू मुझे दे जा मैं कुछ पैसे देकर वहां से चला आया एक वकील मित्र से अभी का आया कि उसकी देखभाल करना।

उस बात को करीब 17 व से कुछ ऊपर हो गए होंगे आज मैं उसके लिए पश्चाताप कर

रहा हूं 17 वर्ष मैं बुआ को बिना देखे काट दिया वह बुआ जिन्होंने बिना लिए मुझे दिया मुझे प्रेम ही किया जिनकी याद मेरे भीतर भंगार से जलती है जिनका जीवन कुछ हो ऊपर उठ दिलाओ की भांति जलता रहा आज इस सारी वकालत के पैसे और बुद्धिमता की प्रतिष्ठा के ऊपर बैठकर सोचता हूं क्यों मुझसे तनिक सरल सामान्य नहीं बना गया इस सब का मैं अब क्या करूं कि जब समय रहते प्रेम के प्रतिदान से मैं चूक गया यह सब मेल है जो मैंने बटोरा है मेल कि मेरी आत्मा की ज्योति कोडक रहा है मैं यह सब अब नहीं चाहता एक दिन खबर आती है कि वह मर गई कैसे मर गई जाने की कोई जरूरत नहीं जो जाने बैठा हूं वही कम नहीं है उसी के 50 सको तो कुछ का कुछ हो जाऊं बुआ तुम गई तुम्हारे जीते जी मैं रात भर ना आया अब सुनो मैं यह जैजी छोड़ता हूं जगत का आरंभ समारंभ ही छोड़ता हूं और इस पूरी घटना के लिए अपने आप को जिम्मेदार मानते हुए प्रमोद अपने जज के पद से त्यागपत्र दे देता है।